Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

कोण्डागॉव जिले का भंगाराम जातरा का मोनोंग्राफ अध्ययन

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

Chhattisgarh

TRTI

TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

शासकीय उपयोग हेतु :

प्रतिवेदन क्रमांक : 19

कोण्डागॉव जिले का भंगाराम जातरा का मोनोंग्राफ अध्ययन

निर्देशन :

शम्मी आबिदी (आई.ए.एस)

संचालक

अध्ययन एवं प्रतिवेदन:

डॉ रूपेन्द्र कवि

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में कोण्ड़ागॉव जिला के केशकाल– सुरडोंगर में भंगाराम माँई का प्राचीन मंदिर स्थित है । सुरडोंगर–केशकाल में होने वाला ''भंगाराम जातरा'' अन्य क्षेत्रों में होने वाले जनजातीय जात्रा से हटकर विशिष्ट है। इसमें न सिर्फ ग्रामीण आदिवासी जनसमुदाय बल्कि क्षेत्र के समस्त देवी–देवता भी इस जातरा में सम्मीलित होते है'। सम्मिलित देवी–देवता का भंगाराम जातरा के दिन भंगाराम माई के दरबार में न्यायालय लगता है और न्यायाधीश के रूप में मॉई भंगाराम सभी देवी – देवताओ को सुनती है। जब किसी रवाना से अन्यत्र लाये/आये अपराधी देवी–देवताओं का रवानगी स्थल (दैवीय कटघरा) में रहने के बाद भंगाराम माई के न्यायालय में यदि दोषी मान लिया जाता है। इस विशिष्ट व अदभुत संस्कृति को संजोकर रखने आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई जगदलपुर के प्रभारी अनुसंधान अधिकारी डॉ. रूपेन्द्र कवि के द्वारा मोनोग्रॉफ अध्ययन कर प्रतिवेदन तैयार किया गया ।

इस संदर्भ में स्थानीय जानकार/पत्रकार श्री कृष्णदत्त उपाध्याय जी, श्री घनश्याम सिंह नाग, देव समिति सुरडोंगर के पुजारी श्री सरजू रामगौर जी, सिरहा श्री कोदूराम गौर जी, सचिव श्री नन्दलाल सिन्हा जी व समस्त पदाधिकारी व गणमान्य नागरिको का भरपुर सहयोग था सभी का हार्दिक धन्यवाद ।

कोण्डागॉव जिले के भंगाराम जातरा का मोनोग्राफ अध्ययन'' क्षेत्र के जन मानस के समृद्ध धार्मिक विश्वास व संस्कृति को लिपिबधकर संजोकर रखने तथा शासकीय प्रशासकीय कार्य के साथ ही रूचि रखने वाले पाठक व शोधकर्ताओ के लिए उपयोगी सिद्ध होगी । इसी अपेक्षा के साथ ।

(शम्मी आबिदी आई.ए.एस)
संचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
रायपुर (छ.ग.)

–: विषय सूची :–

क्र.	विषय		पृ. क्र
1	प्रस्तावना	:–	01–03
2	भंगाराम माँई एवं सहयोगी देवी–देवता	:–	04–12
3	भंगाराम जातरा	:–	13–23
4	परगना के देवी–देवता	:–	24–27
5	दैवीयन्यायालय एवं न्याय प्रक्रिया	:–	28–32
6	व्यवस्था एवं संचालन	:–	33–40
7	उपसंहार	:–	41

प्रस्तावना

बस्तर की सभ्यता–संस्कृति, पूजा–पाठ, परम्परा एवं अचंभित करते श्रद्धावनत कर देने वाले देवलोक के बारे में जिज्ञासा रखने वालों को कोंडागांव जिला के केशकाल तहसील में भंगाराम माँई के दर पर होने वाले भांदा जातरा आमंत्रित करता है।

राष्ट्रीय राजमार्ग–30 पर स्थित नगर पंचायत केशकाल में स्थित सुरडोंगर अर्थात देवी देवताओं की स्थली सुरडोंगर के उत्तरी छोर पर बारह मोड़ों वाली सुंदर, सुरम्य, मनोरम घाटी के शीर्ष पर समुद्र सतह से लगभग 2300 वर्ग फिट की ऊंचाई पर निर्जन वनक्षेत्र पर स्थित है भंगाराम देवी का स्थल। कच्चे खपरैल एव ईंट, गारा मिट्टी से निर्मित मंदिर में विराजमान नौ परगना की प्रमुख आराध्य देवी भंगाराम माँई के दर पर महज मानव ही नहीं बल्कि अंचल के सभी देवी–देवता भी श्रद्धावनत हो जाते हैं।

भंगाराम माँई के स्थल पर प्रति वर्ष यह जातरा होता है। यह जातरा भादों मास के दूसरे शनिवार के दिन होता है।

भंगाराम मेला होने के ही बाद कांकेर का मेला होता है और केशकाल क्षेत्र में मेला का सिलसिला शुरू हो जाता है।

शनिवार को भंगाराम माँई का वार माना जाता है इसलिए माँई का जातरा शनिवार को ही होता है और माँई के दर पर अपना दुखड़ा, समस्या, याचना लेकर आने वाले याचक/प्रार्थी भी शनिवार को ही आते हैं।

भंगाराम माँई का भादों (भादंव) मास में होने वाला जातरा बहुत विशिष्ट होता है। जातरा के छः सप्ताह पूर्व से ही प्रति शनिवार को माँई जी के दर पर सेवा पूजा होता है। जिसे हम समझने के लिए सहज सामान्य भाषा में देवी जागरण भी कह सकते हैं। छः सप्ताह तक सेवा पूजा होने के बाद सातवें शनिवार को जातरा होता है। जिसमें सहभागी बनने के लिए दूर–दूर से देवी–देवता एवं उसके भगत– पुजारी, सिरहा, गांयता एवं मांझी–चालकी व गांव के पटेल– मुखिया अटूट आस्था संजोये भंगाराम माँई के दर पर पहुँचते हैं।

अनुसंधान प्रविधि :–

भंगाराम जातरा मोनोग्राफ अध्ययन के लिए आयोजन में संलग्न धार्मिक प्रमुखो, ग्रामवासियों, समिति के सदस्यों, स्थानीय शासकीय कर्मचारियों एवं विषय के जानकार व्यक्तियों से प्राथमिक तथ्यो का संकलन किया गया । प्राथमिक तथ्यो के संकलन हेतु असंरक्षित साक्षात्कार निर्देशिका तथा छायाकंन हेतु डिजीटल कैमरे का उपयोग किया गया । द्वितीयक तथ्यों का संकलन संदर्भ ग्रंथो, शासकीय प्रतिवेदनों, समिति की पंजी तथा इंटरनेट से उपलब्ध जानकारियों से किया गया है ।

उद्देश्य :–कोण्डागॉव जिले का भंगाराम जातरा का मोनोग्राफ

अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

भंगाराम जातरा के ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करने का अध्ययन करना।

1. भंगाराम जातरा में प्रयोग होने वाले कर्मकाण्ड का अध्ययन करना।
2. भंगाराम जातरा जनजाति समुदायों द्वारा स्वसहयोग व श्रम प्रदान करने का अध्ययन करना।
3. भंगाराम जातरा में होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों का प्रथागत विधियों का अध्ययन करना।
4. भंगाराम जातरा में बदलाव का अध्ययन करना।
5. प्रमुख देवी–देवताओं को जानने हेतु अध्ययन करना।
6. भंगाराम जातरा मे योगदान देने वाले मॉंझी,चालकी, मंदिर समिति सदस्य, आयोजकों आदि सदस्यों का अध्ययन करना।

महत्वः– कोण्डागॉव जिले का भंगाराम जातरा का मोनोग्राफ अध्ययन का निम्नलिखित महत्व हैः–

भंगाराम जातरा की जानकारी प्राप्त करने में इसका महत्व निम्न प्रकार है :–

1. भंगाराम जातरा से संबंधित ज्ञान के विकास में सहायक।
2. भंगाराम जातरा के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायक ।
3. भंगाराम जातरा के सामाजिक, सांस्कृतिक,धार्मिक,राजनैतिक व्यवस्था से अवगत होना।
4. भंगाराम जातरा से संबंधित प्रमुख देवी–देवताओं के संबंध से अवगत होना।
5. भंगाराम जातरा में जनजातियों के अनेकता में एकता का दर्शन संबंधी जानकारी प्राप्त करना।

2. भंगाराम माँई एवं सहयोगी देवी–देवता

भंगाराम माँई का बस्तर आगमन :–

जनश्रुति है कि एक बार रात्रि में बस्तर के तत्कालीन महाराजा भैरमदेव को एक देवी ने स्वप्न में दर्शन देकर राजा से देवी ने कहा कि वे बस्तर आना चाहती है, तो क्या बस्तर में उनका मान सम्मान होगा ?

स्वप्न में ही राजा ने देवी को बस्तर आगमन के लिए आग्रह करते हुए निमत्रंण दिया साथ ही पूर्ण मान सम्मान का वचन दिया। दूसरे दिन राजा भैरमदेव ने रात्रि में स्वप्नावस्था में देवी को दिये गये वचन को याद कर कोरकोटी गाँव निवासी बैजनाथ हल्बा को ,जो कुँवर पाठ देव के पुजारी थे, सूचित किया कि एक देवी का बस्तर आगमन हो रहा है ।

अतः वे कुँवर पाठ देव के साथ केशकाल में उनकी अगवानी के लिये प्रतीक्षा करें। कुँवर पाठ देव का आँगा जो अभी केशकाल में है,पहले जामगाँव में था । उस आँगा को जामगाँव से केशकाल लाया गया तथा बैजनाथ हल्बा कोरकोटी गाँव से केशकाल आये। उस समय बैजनाथ के भाँजे विश्राम हल्बा नारायणपुर से मेहमान के रूप में अपने मामा बैजनााथ के घर कोरकोटी आये हुए थे। बैजनाथ हल्बा उन्हे भी देवी के स्वागत के लिए अपने साथ केशकाल ले कर आये। कुँवर पाठ देव ,उनके पुजारी एवं जन समुदाय उस अज्ञात देवी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रत्येक के मन में कौतूहल और उत्सुकता बनी हुई थी कि आने वाली देवी कैसी होगी ? वह कहां से आ रही होगी और किस रूप मे आ रही होगी ?

तभी देखते ही देखते घोर गर्जना के साथ एक बवंडर सा आया। लोग रोमांचित हो रहे थे। उस बवंडर ने नारायणपुर से मेहमान के रूप में अपने मामा के यहां आये विश्राम हल्बा का चारों ओर से फेरा लगाया और उन्हें एक ही झटके में उठा कर जमीन पर पटक दिया। देवी का सत्व विश्राम की देह से समा गया था। भयाक्रांत से घबराये हुये लोग देवात्मा से पूछने लगे कि वह कौन है जो इस शुभ घड़ी में अशुभ लक्षण दिखा रहा है। इस पर विश्राम हल्बा की देह में सवार देवात्मा कहने लगी ''मै नाथू (महाराजा)को ही बताऊँगी कि मैं कौन हूँ। यदि मेरे सबंध मे जानना चाहते हो तो चलो मेरे साथ नाथू (राजा) के पास।''

यह सुनकर कुँवर पाठ देव –आँगा के पुजारी बैजनाथ, विश्राम की देह में समाया सत्व और उपस्थित जन समुदाय ने कौतूहल के साथ राजा से मिलने के लिये जगदलपुर की ओर पैदल प्रस्थान किया।

देवी का राजा से भेंट :–

लोगों का यह जत्था तीन दिनों तक पैदल चल कर इन्द्रावती नदी के तट पर पहुँचा। तीन दिन और तीन रातों तक देवी के सत्व ने विश्राम हल्बा के शरीर को नही छोड़ा। इसके फलस्वरूप विश्राम को उपर्युक्त अवधि में निराहार रहना पड़ा। उनकी देह एकदम शिथिल हो गयी थी। किसी तरह इन्द्रावती को पार कर सभी जगदलपुर के खड़ग बगीचा/खड़क घाट तक पहुँचे। उनके वहाँ पहुँचने की सूचना राजा को दी गयी और बताया गया कि प्रतीक्षित देवी का उनके नगर में आगमन हो गया है और वे उनसे खड़ग बगीचा में भेंट करना चाहती है। सूचना पा कर राजा

भैरमदेव अपने सहयोगियों के साथ देवी से मिलने खड़गघाट (खड़कघाट) पहुँचे। परम्परानुसार धूप, सुगंधित धुआँ, गुग्गुल का आहार देते हुए राजा देवी का स्वागत कर रहे थे। देवी ने धूप की धूनी को अस्वीकार करते हुए एक काले बकरे की बली माँगी। माँग के अनुसार राजा ने स्वंय ही बकरे कि बलि दे कर देवी का स्वागत किया। तत्पश्चात् राजा ने पूछा कि वे कौन सी देवी है और कहाॅ से आयी है ? इस पर देवी ने कहा, मैं ओरंगल (वारंगल) देश से आयी हूँ। अब मुझे निवास के लिए उपयुक्त स्थान बताइये ।

राजा ने कहा'' देवी। आप जहाँ प्रकट हुई हैं वहीं (केशकाल में) निवास कीजिये। इस पर देवी ने कहा मैं वन की देवी हूँ। इसलिये वन में निवास करूंगी।

इस पर राजा ने कहा, माँई बस्तर का प्रवेश द्वार घनघोर जंगलों से आच्छादित है। आप उस स्थान पर निवास करिये।

राजा का प्रस्ताव सुन कर देवी ने हामी भर दी। फिर देवी के सत्व ने विश्राम हल्बा की देह को छोड़ दिया। महाराजा भैरमदेव के साथ कुछ प्रजाजन एवं सेवक देवी के निवास की व्यवस्था के लिये केशकाल रवाना हुए।

देवी की प्राणप्रतिष्ठा :—

बीहड़ वनों से आच्छादित काँकेर से बस्तर प्रवेश मार्ग पर सर्वसम्मति से एक उपर्युक्त स्थान का चयन किया गया । उस स्थान पर लकड़ी का एक खम्भ गड़ा कर स्वयं महाराजा ने देवी की प्राण प्रतिष्ठा किया था व देवी पर तेल—हल्दी चढ़ाया था। सेवा (पूजा) का भार विश्राम हल्बा को सौंपते हुए व्यवस्था हेतु चेरबेड़ा नामक गाँव भी दान में दिया। गॉव से प्राप्त राजस्व को देवी की सेवा—पूजा में खर्च किया जाता था। वर्तमान में 9 परगनों के ग्रामीण आपस में

चंदा कर पूजा–व्यवस्था का खर्च वहन करते हैं।

देवी का नामकरण :–

देवी की आगमन व नामकरण के लिखित साक्ष्य का अभाव है। देवी का आगमन ओरंगाल से बताया जाता है। व नामकरण जनश्रुति के अनुसार ओरंगाल माँई से कालांतर में भंगाराम माँई हो गया।

तेलीन सत्ती माँई:– यह भंगाराम माँई का ही दूसरा नाम है। यह मूल मंदिर से कुछ दूरी पर ही स्थित हैं अतः एक ही देवी दो स्थल पर विराजित हो कर पूजी जा रही है।

वर्षों पहले बस्तर में कोई सड़क या रेल–मार्ग नहीं था। एकमात्र वन –मार्ग ही सम्पर्क– मार्ग था। बैलागाड़ी से लोग यात्रा करते थे। इसी वन–मार्ग पर 'भंगाराम' की प्राण–प्रतिष्ठा के समय तेल एवं हल्दी चढ़ायी थी, इसलिए देवी पर आस्था रखने वाले गाड़ीवान भी बीहड़ व पर्वत में स्थित इस खतरनाक घाटी में गाड़ी, जानवर और अपनी सुरक्षा की कामना ले कर देवी के ऊपर 'ओंगन तेल' (बैलगाड़ी के चक्कों के लिये उपयोग किये जाने वाले तेल को स्थानीय लोक–भाषा में 'ओंगन तेल' कहा जाता है) चढ़ाया करते थे। इस प्रकार देवी की कृपा के आकांक्षी गाड़ीवानों द्वारा प्रतिदिन तेल चढ़ायें जाने के कारण यह देवी तेल में लीन हो गयीं, इसलिए 'तेल–लीन(तेल्लीन) 'कही जाने लगीं। लोगों को देवी की सत्यता पर अटूट विश्वास होने के कारण इन्हें श्रद्धा से 'सत' या 'सत्ती' आदि सम्बोधन भी दिया जाने लगा और कालान्तर में ये 'सत्ती माँ' के नाम से प्रसिद्ध हो गयीं। इस प्रकार 'भंगाराम माँई' का दूसरा नाम 'तेलीन सत्ती माँई' हो गया।

जिस स्थान पर महाराजा भैरमदेव द्वारा देवी की स्थापना की गयी थी, स्वतन्त्रा के बाद वह स्थान वन विभाग द्वारा

आरक्षित वन घोषित हो गया। इसके फलस्वरूप वहाँ 'जातरा आदि विशेष पूजा का आयोजन प्रतिबन्धित हो गया। इसलिए आरक्षित वन के बाहर मंदिर बना कर देवी की स्थापना की गयी। यद्यपि देवी मार्ग में थीं और मार्ग में ही रहना पंसद करती है।, इसलिए राजमार्ग क्रमांक 43 जो अब राजमार्ग क्रमांक 30 हो गया है, में भी स्थापना की गयी है तथापि दोनो मंदिरों में एक ही देवी की पूजा की जाती है।

देवी का आसन :– 'भंगाराम माँई' डोली पर विराजती है। यह डोली बेल–वृक्ष की लकड़ी से बनी होती है।

पूजा–विधान एवं व्यवस्था:– 'भंगाराम माँई' की पूजा पूरे नौ परगनों के लोग श्रद्धा– भक्ति से करते हैं। आदिवासी परम्परानुसार नारियल,तेल, हल्दी, नीबू, धूप अगरबत्ती, फूल, चॅावल आदि से पूजा की जाती है।

चूँकि प्राण–प्रतिष्ठा के समय स्वयं राजा भैरमदेव ने भैंसे की बलि दी थी इसलिए प्रतिवर्ष एक भैंसा की बलि देने की प्रथा चल पड़ी। किन्तु वर्तमान कानून को मद्देनजर भूतपूर्व विधायक स्व.गंगाराम राणा एवं तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री ब्रह्मदेव शर्मा की संयुक्त पहल से भैंसा काटने की प्रथा बंद कर दी गयी है। अब भैंसा के बदले देवी को भेड़ की बलि दी जाती है। मनौती मानने वाले बकरा, मुर्गा आदि की बलि भी चढ़ाते हैं। 'जातरा' का व्यय सभी नौ परगनों के लोग सामूहिक रूप से वहन करते हैं। प्रत्येक परगना का एक मुखिया है जो 'जातरा' में बलि एवं अन्य व्यय के लिये अपने क्षेत्र से सहयोग संग्रहण करवाता है तथा ग्रामवासियों और देवी–देवताओं को 'जातरा' में भाग लेने निमन्त्रण भिजवाता है।

सिरहा :–

"जिस व्यक्ति के शरीर में देवी की सवारी आती है या देवी जिस व्यक्ति के माध्यम से बोलती है, वह 'सिरहा' कहलाता है। 'सिरहा' की मृत्यु के पश्चात् 'सिरहा' के जयेष्ठ पुत्र को ही प्रायः 'सिरहा' बनाने का प्रथा है। किन्तु यदि किसी 'सिरहा' का पुत्र नही होता है। तो उसके भाई या भाई के पुत्र को अपना 'सिरहा' बनाया जाता है।"

'भंगाराम माँई' की सत्व सर्वप्रथम विश्राम हल्बा के शरीर में आया था इसलिए विश्राम की मृत्यु की पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र परऊ राम को देवी ने 'सिरहा' बनाया। परऊ के पुत्र रंजित, रंजित के पुत्र बिसाल तक सिरहा बने। वर्तमान में बिसाल का पोता कोदूराम 'भंगाराम माँई का 'सिरहा' है।

विश्राम हल्बा के वंशज सिरहा एवं पुजारी परिवार से निम्न सदस्य हैं, जो बारी–बारी से भंगाराम माँई की सेवा–पूजा हेतु मन्दिर में उपस्थित रहते हैं।

भंगाराम माँई के सहयोगी देवी–देवता

'भंगाराम माँई' के सहयोगी के रूप में अनेक देवी–देवताओं का अस्तित्व है इन देवी–देवताओं को भी भंगाराम माँई के स्थल में सहयोगी देवी–सहायेगी देवी–देवता के रूप में आस्था पूर्वक ससम्मान पूजा–अर्चना की जाती है। सहयोगी देवी देवताओं का विवरण निम्नानुसार है:–

कुँवर पाठ देवः– कुँवर चक्कर सिंह किसी कार्यवश नगरी क्षेत्र में गए थे जहां बीमारी फैली हुई थी। दुर्भाग्यवश कुँवर जी इस महामारी के चपेट में आ गये तथा वहीं उनकी मृत्यु हो गयी। स्वर्गवास के बाद उनकी आत्मा ग्राम जामगाँव आयी। कुँवर जी की आत्मा गाँव में आयी है, यह जान कर ग्रामवासियों ने जामगाँव में ही एक गुड़ी (ग्रामीण मंदिर) बना कुँवर जी की देव के रूप में स्थापना की । कुँवर जी पाट देव के अनन्य भक्त थे, इसलिए कुँवर जो पाठ को

जोड़ कर उन्हें कुँवर पाठ नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। इस तरह कुँवर और पाठ दो भिन्न–भिन्न देव होते हुए भी उन्हें एक–दूसरे के पूरक समक्ष का उनके लिये संयुक्त रूप से अब एक ही नाम 'कुँवर पाठ' प्रयोग में लाया जाता है तथा पूजा भी दोनों की एक साथ (संयुक्त रूप से) की जाती है। जब 'भंगाराम माँई की स्थापना राजा भैरमदेव ने केशकाल में की तो 'कुँवर पाठ' को 'भंगाराम माँई का दीवान नियुक्त किया गया। उसके साथ ही कुँवर पाठ की स्थापना भी जामगॉव से ला कर केशकाल में गुड़ी बना कर कर दी गयी।

आहार :– कुँवर पाठ देव को मुर्गी, बकरा एंव परेवाँ (कबूतर) की बलि दी जाती है।

प्रतिक चिन्ह :– कुँवर पाठ देव का एक आँगा है, जिसमें फन फैलाए चाँदी से बने नाग एवं चाँदी के 36 पटटे् मढ़े हुए हैं।

मान्यता :– इन्हें देवी–देवताओं के इस अलौकिक राज्य का दीवान माना जाता है। नौ परगनों के देवी – देवताओं में श्री माँ भंगाराम देवी के बाद इनका दूसरा स्थान है।

मान्यता के अनुसार देवी – देवताओं पर नियन्त्रण तथा संतुलन का कार्य कुँवर पाठ देव ही करते हैं। वर्तमान में ढोड़गा पारा निवासी श्री छन्नू मरई कुँवर पाठ देव के धुरवा अर्थात पुजारी हैं।

खानदेव/काना पठान उर्फ डॉक्टर देव :– भंगाराम माँई के मंदिर में एक 'डॉक्टर देव' प्रतिष्ठित हैं। जनश्रुति के अनुसार एक बार बस्तर में हैजे की महामारी फैली हुई थी । भारी संख्या में बस्तर वासियों के प्राणान्त हो रहे थे। चिंतित अँग्रेज सरकार द्वारा महामारी के नियन्त्रण हेतु नागपुर से एक डॉक्टर को बस्तर भेजा गया। डॉक्टर साहब ने पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ मरीजों का इलाज कर हैजे पर नियन्त्रण कर लिया और पूरे बस्तर को महामारी से मुक्त कर दिया।

इसके बाद वे बस्तर से विदा हो कर वापस नागपुर जा रहे थे किंतु दुर्घटनावश केशकाल घाटी में उनकी मृत्यु हो गयी। डॉक्टर साहब की निःस्वार्थ मानव–सेवा से भंगाराम मॉई अत्यन्त प्रभावित थीं । इसलिए उन्होंने उनकी मृतात्मा को आमन्त्रित कर देवताओं की टोली में शामिल कर लिया और नौ परगनो में होने वाली बीमारियाँ की रोकथाम की जिम्मेदारी उन्हें दे दी । डॉक्टर साहब एकाक्षी तथा जाति के मुसलमान थे। इसलिए इस देव को श्रद्धा से ' खानदेव व काना पठान देव' के नाम से भी सम्बोधित किया गया जाता है।

आहारः— 'डॉक्टर देव' को मुर्गी का हलाल कर बलि दी जाती है या मुर्गी का अण्डा तोड़ कर बलि चढ़ायी जाती है।

मान्यताः— 'डॉक्टर देव' का सत्व किसी बालक या किशोर के सिर पर सवार हो कर आता है। तब वह सिरहा अंग्रेजी शब्दों का उपयोग कर अपने डॉक्टर होने का प्रमाण देता है। मान्यता है कि 'डॉक्टर देव' किसी भी बीमारी को दूर करते हैं। पूरे नौ परगनों के किसी भी गाँव में महामारी फैलता है तो 'डॉक्टर देव' को आमन्त्रित किया जाता है। डॉक्टर साहब की एक छड़ी है। 'सिरहा' इसी छड़ी को मरीज पर घुमा कर इलाज करता है। अधीनदास, लच्छनदास 'डॉक्टर देव' के 'सिरहा' हो चुके हैं।

खिलौली / खिरोली देवः—

बताया जाता है कि खरोली नाम का एक व्यक्ति था जो जाति का रावत था। वह राजमहल में पानी भरने का काम करता था राजा भैरमदेव ने उसे भंगाराम माँई की सेवा के लिये केशकाल भेजा था। मरणोपरन्त देवी भंगाराम माँई ने उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर उसे भी अपनी टोली में देवता के रूप में सम्मिलित कर लिया। खिरोली देव को मुर्गी, कबूतर तथा बकरे की बलि दी जाती है।

प्रतीक चिन्ह :— खिरोली देव माँई जी की सेवा करने वाले देव हैं।, इसलिए इनकी स्थापना मंदिर के बाहर एक काष्ठ–स्तम्भ के रूप में की गयी है।

मान्यता :– 'खिरोली देव'को भंगाराम माँई की सेवा के लिये भेजा गया था, इसलिए इनकी मान्यता एक समाज–सेवक के रूप में है।

फँड़ेयार बाबाः–

कहा जाता है कि फँड़ेयार नाम का एक व्यक्ति महाराजा भैरमदेव के महल से चँवर डुलाते हुए राजा भैरमदेव के साथ केशकाल तक आया था। उसकी मृत्यु के पश्चात् माँई जी ने इन्हें भी देवताओं की टोली में शामिल कर सेवा के बदले सम्मान दिया।

'फँड़ेयार बाबा' को कबूतर एवं बकरे की बलि दी जाती है।

प्रतीक चिन्हः– प्रस्तर का गोलाकार का प्राकृतिक पत्थर गुड़ी में स्थापित किया गया है।, जहाँ मान्यता 'फँड़ेयार बाबा' के नाम से उनकी पूजा की जाती है तथा बलि दी जाती है।

मान्यताः– 'फँड़ेयार बाबा' को माँई जी के चँवर डुलाने वाले सेवक के रूप में मान्यता दी गयी है।

घाट रावः– घाटराव ग्राम सुरडोंगर के सोड़ी (गोंड) लोगों के देव हैं, जिन्हें बाद में भंगाराम देवी के दल में शामिल कर लिया गया है। अब नौ परगनों के देवता के रूप मे ंइनकी पूजा की जाती है। तथा बलि अर्पित की जाती है।

मान्यताः— 'घाट राव' की मान्यता चौकसी करने वाले देव के रूप में है। देवी—मंदिर से कुछ दूरी पर एक वृक्ष के नीचे इन्हें सुअर की बलि दी जाती है।

3. भंगाराम जातरा

भंगाराम जातराः— प्रति वर्ष भाद्र (भादंव) मास में माँई भंगाराम का जातरा आयोजित किया जाता है। जातरा के पहले 5 अथवा 7 शनिवार को सेवा (विशेष पूजा) की जाती है और अन्तिम शनिवार के दिन ही जातरा का विशेष आयोजन होता है। इस जातरा में पूरे नौ परगानों के लोग शामिल होते है। साथ ही प्रत्येक गाँव से देवी—देवता भी, जो लाट, आँगा, छत्तर आदि के रूप में होते हैं, लाये जाते हैं। दूर—दराज के लोग जातरा के एक दिन पूर्व शुक्रवार को ही केशकाल पहुँच जाते है। जातरा के दिन सर्वप्रथम कुँवर पाठ की अगवानी कर बाजे—गाजे के साथ उन्हें लाया जाता है। पूजा के बाद आमन्त्रित देवी—देवता बाजे की धुन पर नाचते—कूदते हैं। दिन भर उत्साह का माहौल बना रहता है। लोगों की भीड़ मेले का आभास कराती है।

किन्तु इस उत्सव में महिलाओं की उपस्थिति वर्जित है। संध्या काल में बलि दी जाती है। बलि का प्रसाद ग्रामीणों में बाँट दिया जाता है। ग्रामीण अपने साथ बर्तन और चाँवल भी ले कर आते हैं तथा रात्रि में मंदिर के आसपास ही भोजन बना कर खाते और जंगल में ही रात गुजारते हैं। छोटा सा कच्चा विश्रामगृह देवी—समिति द्वारा बनवाया गया है कुछ टीनवाले शेड बनाये गये हैं। किन्तु यह पर्याप्त नहीं है। लोगों को खुले में रात गुजारनी पड़ती है।दूसरे दिन सेवा—पूजा के पश्चात् प्रत्येक गॉव से आये देवी—देवताओं को श्रीफल भेंट कर विदाई दी जाती है।

इस जातरा में निम्न देवी–देवता एवं उनके समुख दर्शित पुजारी सम्मिलित होते हैः–

आँगादेव

क्र	आँगादेव का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
1	नरसिंगनाथ	राजेश नेताम	बड़े डोंगर
2	नरसिंगनाथ	नोहर सिंह	बड़े डोंगर
3	खांडा डोकरा	रूपसिंह	घनोरा
4	सोनकुँवर	मोतीराम	खुटपदर
5	लाल कुँवर	घड़वाराम	बड़गई
6	चेलिकसाय	नाथूराम	होनहेड
7	बालकुँवर	रामसिंह	सिदावंड
8	फुलकुँवर	झुनऊराम	ठेमली
9	सोनकुँवर	देवसिंह	बकानभाटा
10	हीराकुँवर	मेहतर	गुडरीपारा
11	बालकुँवर	बिसनाथ	बाड़ागाँव
12	पिला बाबू	दयाराम	सिंगनपुर
13	हीराकुँवर	ढेलूराम	खेतरपाल
14	बालकुँवर	मानसाय	खेतरपाल
15	नतुरगुण्डी	गंगाराम	स्वाला
16	भण्डारिन पाठ	सोमारू	डोहलापारा
17	राजकुँवर	जैराम	करमरी

क्र	आँगादेव का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
18	सोनकुँवर	कारिया	सिंगनपुर
19	पिला बाबू	दानी	सरगीपाल
20	लिंगो	गागरू	सरगीपाल
21	बूढ़ा देव	रैनू	उड़ीदगाँव
22	बालकुँवर	सामनाथ	उड़ीदगाँव
23	कुँवारी मावली	बकऊराम	टेंक्सा
24	ललित कुँवर	कंगाल	उड़ीदगाँव
25	दुलार पाठ	मिकला	सिवनीपाल
26	नतुरगुण्डी	तातू	पिपरा
27	बालकुँवर	लालसाय	पिपरा
28	नतुरगुण्डी	रेंगी	बीगाँव
29	फुलपाठ	आसमन	मांड़ोकी खरगाँव
30	कुँवर पाठ	सतलू	गौरगाँव
31	हीराकुँवर	जगदेव	मुरगाँव
32	गढ़पाठ	जगनाथ	रावबेड़ा
33	पिलापाठ	छबिलाल	लेण्डार
34	फुलपाठ	लखमू	जिर्रापारा
35	बालकुँवर	मिरसाय	कोदोभाटा
36	बालकुँवर	बालसाय	बड़ेखौली
37	कारटी डोकरा	कुल्ले	फुण्डेर
38	नाँग सूरजा	चमरा	बेलगाँव

क्र	आँगादेव का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
39	कुँवर पाठ	लछमन	कोरहोबेड़ा
40	नतुरगुण्डी	चैतराम	उड़कापारा
41	सोनकुँवर	चमरा	बीरपारा
42	फुलपाठ	चैतराम	आमाडिही

43	दोसी डोकरा	अर्जुन	चिचाड़ी
44	हीराकुँवर	हीरामन	जामागाँव
45	हीराकुँवर	पल्लीराम	सोनपुर
46	फुलपाठ	रूपसिंह	बहीगाँव
47	जलकीपाठ	अमरसिह	गोबरहीन
48	पाठदेव	लछमन	सुरडोंगर

इस जातरा में सम्मिलित होने वाले छत्तर व पुजारी के नाम निम्नानुसार हैः–

क्र	छत्तर का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
1	दन्तेश्वरी देव	सोनूराम राना	बड़े डोंगर
2	गढ़ हिंगलाज	घरसूराम	घनसाघाट
3	मावली देवी	चैतूराम	बड़गई
4	मावली देवी	बज्जूराम	भाटगाँव
5	हिंगलाजिन देवी	आसाराम	खुटपदर
6	मावली देवी	दलसाय	तोसकापाल
7	मावली देवी	घसिया	निराछिंदली
8	बुढ़ीमाता	बैसाखू	अरण्डी
9	जिमिदारिन देवी	लछमन	खजरावण्ड
10	शितला माता	घसिया	टेंक्सा
11	फुलसुँदरी	मकऊ	टेंक्सा
12	माता	धनसू	अरण्डी

क्र	छत्तर का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
13	माता	मानसिंह	मैनपुर
14	माता	घसिया	अरण्डी
15	माता	सुकदेव	अरण्डी
16	माता	बॉडाराम	डुमरपदर
17	दन्तेश्वरी देवी	चैतूराम	ठेमली
18	मावली देवी	सगराम	भर्रापारा
19	मावली देवी	महरू	देवगाँव
20	कुँआरी मावली देवी	रैनूराम	हरवाँकोडो
21	दन्तेश्वरी देवी	सुकाल	बयालपुर
22	बुढ़ीमाता	बाडेराम	देवतरा
23	दन्तेश्वरी देवी	मन्साराम	खेतरपाल
24	गढ़मावली देवी	सिंगलू	आँवरी
25	कुँआरी मावली देवी	ढेलूराम	खेतरपाल
26	दन्तेश्वरी देवी	दयाराम	सिंगनपुर
27	दन्तेश्वरी देवी	दयाराम	सिंगनपुर
28	जिमिदारिन देवी	महरू	बारदा
29	शितला माता	तिहारू	कोरहोबेड़ा
30	शितला माता	कुण्डीराम	बड़ेखौली
31	मावली देवी	मंगलराम	भण्डारवण्डी
32	मता	बुटूसन	गौरगॉव
33	बुढ़ीमाता	सोनू	उँदरी

क्र	छत्तर का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
34	शितला माता	गाँडाराम	मुरवेण्ड
35	शितला माता	दुकालू	नेलाझर
36	शितला माता	लखमू	नारना
37	मावली देवी	बालचँद	पिपरा
38	मावली देवी	थानूराम	रावबेड़ा
39	बुढ़ीमाता	आयतू	पिपरा
40	मावली देवी	चैतराम	जरण्डी
41	दन्तेश्वरी देवी	मीलो	सिवनीपाल
42	अमलीबुँदिन माता	कार्तिक	पारोण्ड
43	बुढ़ीमाता	बुधराम	कलगाँव
44	कारी ककालिन देवी	हलाल	केसाकाल

इस जातरा में सम्मिलित होने वाले लाट एवं डँाग/ डँगई (लाट एवं डँगई) का विवरण निम्नानुसार है:–

क्र	**लाट का नाम**	**पुजारी का नाम**	**गाँव का नाम**
1	माता	घसिया	तोसकापाल
2	मावली देवी	नारायन	खोले मुरवेण्ड
3	हिंगलाजिन देवी	दसरथ	सिदावण्ड
4	बुढ़ी माता	पीलाराम	गुडरीपार
5	बुढ़ी माता	बुधु	हलिया

क्र	लाट का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
6	जिमिदारिन देवी	अंकालू	सिदावण्ड
7	जिमिदारिन देवी	सुकराम	सिलाटी
8	जिमिदारिन देवी	लच्छूराम	मॉझीचेर्स
9	माता	बैठीराम	कोरगाँव
10	मावली देवी	पुनऊराम	कोरगाँव
11	फुलपाठ माता	घसिया	कोहकामेटा
12	कंकालिन देवी	बुधुराम	कोहकामेटा
13	शितला माता	कंगाल सिंह	कोहकामेटा
14	हिंगलाजिन देवी	फागूराम	कोहकामेटा
15	कंकालिन देवी	सियाराम	कोहकामेटा
16	शितला माता	ठाकुर राम	प्राधनचेर्रा
17	शितला माता	गजानन्द	सुरडोंगर
18	माता	भदूराम	सुरडोंगर
19	माता	लछमन	सुरडोंगर
20	माता	चतुर	सुरडोंगर
21	कुँआरी मावली देवी	सोमलाल	सुरडोंगर
22	बुढ़ी माता	सुरदर्शन	सुरडोंगर
23	शितला माता	सुकदू	सुरडोंगर
24	बुढ़ी माता	सुकदेव	सुरडोंगर
25	जिमिदारिन देवी	काना	विश्रामपुरी
26	बुढ़ी माता	सोभी	बीरापार

क्र	लाट का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
27	शितला माता	सुरजू	सोनपुर
28	कुँआरी मावली देवी	बन्सी	देवगॉव
29	बुढ़ी माता	धनसिंह	नयापारा
30	बुढ़ी माता	रोयदास	गववाड़ी
31	माता	कारिया	सिंगनपुर
32	बुढ़ी माता	सुदेर	करमरी
33	परदेशीन माता	फुलसिंह	विश्रामपुरी
31	माता	कारिया	सिंगनपुर
32	बुढ़ी माता	सुदेर	करमरी
33	परदेशीन माता	फुलसिंह	विश्रामपुरी
34	बुढ़ी माता	साधूराम	बोरगाँव
35	जिमिदारिन देवी	धनीराम	कोदोभाट
36	बुढ़ी माता	बिरसिंह	बोरगॉव
37	शितला माता	सोहन	बोरगॉव
38	चिंगरानी माता	दसरू	बयालपुर
39	बुढ़ी माता	साधूराम	गोबिदपुर
40	कुँआरी मावली देवी	भावसिंह	गोबिदपुर
41	लंगुर माता	लालसाय	कोसमी
42	माता	चिड़ॅगू	कोसमी
43	माता	ढेलूराम	खेतरपाल

क्र	लाट का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
44	शितला माता	सोनऊ	खेतरपाल
45	कंकालिन देवी	दोसीराम	निराछिंदी
46	मावली देवी	फगनूराम	
47	हिंगलाजिन देवी	घड़वाराम	खुटपदर
48	शितला माता	अयोध्या	गौरगाँव
49	बुढ़ी माता	रामसाय	गौरगाँव
50	माता	सोभराय	बटराली
51	गढ़िया देवी		बटराली
52	हिंगलाजिन देवी	फुलसिंह	सिवनीपाल
53	गोंडपाटिन माता	बल्दूराम	सिवनीपाल
54	हिंगलाजिन देवी	सुदर	आमाडिही
55	माता	अयतू	मलगाँव
56	माता	चैतूराम	उड़ीदगाँव
57	बुढ़ी माता	जेठूराम	पेंड्रावन
58	शितला माता	लतखोर	ऊपर मुरवेण्ड
59	शितला माता	बृजलाल	जामगाँव
60	बुढ़ी माता	मंगलराम	गोड़मा
61	माता	मंगलू	जामगाँव
62	माता	असाडू	जामगाँव
63	कंकालिन देवी	सुकराम	जामगाँव

क्र	लाट का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
64	हिंगलाजिन देवी	सुकदेव	जामगाँव
65	शितला माता	मानसिंह	पिटीचुआ
66	गढ मावली	नकछेड़ा	पिटीचुआ
67	माता	फागूराम	केसकाल
68	मावली देवी	फागूराम	भाटगॉव
69	कंकालिन देवी	रामसाय	भाटगॉव
70	बुढ़ी माता	छेडू	सिलियारा
71	काना डोकरा	कंगलूराम	केसकाल
72	मावली देवी	बिसरूराम	फरसाडिही
73	बुढ़ी माता	जयराम	मरकाटोला
74	शितला माता	सोमारू	केसकाल
75	बुढ़ी माता	सुकूराम	केसकाल
76	शितला माता	रूपसिंह	रौधा
77	बुढ़ी माता	अंकालू	सिदावण्ड
78	कुँआरी मावली देवी	सुकलाल	बैजनपुरी
79	बुढ़ी माता	उसीर	तोड़ासी
80	कारी ककालिन देवी	कज्जा	लंजोड़ा
81	पिला बाबू	जगनाा	कोपरा
82	शितला माता	रामसुख	तोड़की
83	हिंगलाजिन देवी	रामलाल	आलोर
84	दन्तेश्वरी देवी	टिबरा	आलोर
85	हिंगलाजिन देवी	मेंगतू	सुरडोंगर

इस जातरा में सम्मिलित होने वाले डोली व उनके समक्ष दर्शित पुजारी का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र	डोली का नाम	पुजारी का नाम	गाँव का नाम
1	हिंगलाजिन देवी	रूपराय	पिपरा
2	बुढ़ी माता	रूपसिंह	बारदा
3	शितला माता	पीलूराम	कोनगुड़
4	शितला माता	सोनूराम	आलोर
5	बुढ़ी माता	सुकलाल	कुए
6	ढाबावली देवी	खतिया	देवगाँव
7	सतवन्तिन देवी	कुँअर सिंह	रेंगाडार
8	शितला माता	दानसाय	दौरे
9	बुढ़ी माता	दानसाय	दौरे
10	शितला माता	रायसिंह	बंजोड़ा
11	शितला माता	श्यामलाल	चिपरेल
12	मावली देवी	दसरू	चिपरेल
13	शितला माता	राजकुमार	गढ़ धनोरा
14	गढ़िया देवी	राजकुमार	गढ़ धोरा
15	गढ़पालिन देवी	राजकुमार	गढ़ धनोरा

देवताओं की 'कुट भाषा'

जिस तरह किसी नृजातीय समूह की अपनी भाषा होती है। उसी तरह देवी–देवताओं की अपनी कुट भाषा होती है । देवी – देवता जब किसी व्यक्ति (सिरहा) पर सवार होता है उस समय सिरहा जिस पर देवी सवार होती है वह इसी 'कुट भाषा' का प्रयोग करता हैं। कुट भाषा को प्रायः उनके पुजारी ही समझते हैं । भंगाराम माँई के अलावा अन्य देवी–देवता भी कुट भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रयुक्त होने वाले कुछ कुट भाषा निम्नानुसार हैं:–

क्र.	हिन्दी	कूट भाषा
1	मनुष्य	मंजा
2	महिला	पनिहारिन
3	बच्चा	फूल
4	किशोरी	कैना
5	किशोर	चिमना
6	सुअर	भुँईतुता
7	बकरा	काटाखैरी
8	कबूतर	पखुड़ा
9	मुर्गी	टोकना
10	शराब	तरपनी
11	खून	फिटकरी
12	नरबलि	लाल भाजी
13	सरकारी व्यक्ति	नाथू
14	जितने भी जीव हैं	जतक जीवींचे

परगना

4. परगना के गायता, माझी व पुजारी

परगना

माँई भंगाराम के प्रभाव क्षेत्र को नौ परगनों में बाँटा गया है। ये नौ परगने निम्नानुसार हैः–

1. गढ़ सिलियारा	2. विश्रामपुरी	3. अडेंगा
4. कोनगुड़(झोड़ियान)	5. सोनाबाल(पीपरा)	6. कोंगेंरा (व्यास कोंगेरा)
7. कोपरा	8. ऑलोर	9. आँवरी

प्रत्येक परगना का एक माँझी या मुखिया होता है। यह माँझी या मुखिया अपने क्षेत्र के गाँवो से जातरा हेतु चंदा का संग्रहण करता है, जातरा आदि धार्मिक कार्यों की सूचना देता है और बैठकों में सहभागिता करता है। देवी देवता सम्बन्धी छुटपुट विवादों को परगनाा में ही निपटाता है। माँझी या मुखिया वंश परम्परानुसार पीढ़ी दर पीढ़ी नियुक्त किये जाते हैं ।

परगन एवं परगन – माँझी सम्बन्धी विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.	परगना का नाम	ग्रामों की संख्या वर्तमान	परगना–माँझी /मुखिया का नाम
1	गढ़ सिलियारा	48	श्री देवकुरन नेतान
2	विश्रामपुरी	29	श्री सरू राम मरकाम
3	अड़ेंगा	18	श्री आशा राम गावड़े
4	कोपरा	12	श्री पनकूराम मण्डावी / श्री दानसाय मरकाम
5	कोनगुड़	50	श्री रूपेश मरावी / श्री मानकू
6	सोनाबाल (पिपरा)	30	श्री बंशीलाल वट्टी
7	कोंगेरा	18	श्री जंगलसिंह कुंजाम
8	आलोर	5	श्री गाण्डो राम कोर्राम
9	आँवरी	20	श्री धरमसिंह मण्डावी

आलोर से गाण्डोराम के पूर्वज को रियासत काल से नौ परगनों का प्रमुख गाँयता बनाया गया है ।

गढ़ सिलियारी :— गढ़ सिलियारा केशकाल नगर पंचायत के अन्तर्गत आश्रित ग्राम है किन्तु गढ़ सिलियारा केशकाल से बहुत पुरानी बस्ती है। केशकाल घाटी भी गढ सिलियारा राजस्व ग्राम के अन्तर्गत आती है। अब इसे केशकाल परगना भी कंहते हैं। इस परगना के मुखिया ग्राम गढ़ धनोरा में निवास करते है । पाहड़ी, जेठूराम, धनीराम, बीरा, और कारिया यहाँ के परगना माँझी थे । वर्तमान में तिहारू यहाँ के मुखिया हैं ।

आड़ेंगा : अड़ेंगा एक ऐतिहासिक महत्व का ग्राम है। इस परगना में कुल 18 गाँव है। इस परगना के मुखिया का निवास कोहकामेटा है । कोला और कोंदा के पश्चात् कंगाल सिंह वर्तमान में परगना माँझी है ।

विश्रामपुरी :— यह ग्राम विकास खण्ड बडे राजपुर का मुख्यालय है । इस परगना में कुल 29 राजस्व ग्राम है। इस परगना के मुखिया आमाडिही में निवास करते है। रेंगा, धाँधू, लक्ष्मण पटेल के बाद सरू ठाकुर यहाँ के परगनाा मुखिया है।

कोनगुड़/झोड़ीयान:— विकास खण्ड़ फरसगाँव के अति दुर्गम क्षेत्र कोनगुड़ में परगना है। जहाँ अन्तागढ़ विकास खण्ड़ के भी कुछ गाँव आते है इस परगना में 50 गाँव है। इसे 'झोड़ियान परगना' के नाम से भी जाना जाता है। बिन्डो, मोहन और बनसिंह परगना मुखिया हुए है। वर्तमान में कृपाशंकर परगना मुखिया हैं।

आलोर:— विकास खण्ड फरसगाँव का यह छोटा—सा परगना है। इस परगना में मात्र 05 गाँव बताये जाते है। सोनसाय, बादराय यहाँ के परगना मुखिया हुए हैं। वर्तमान में गाण्डोराम इस परगना के मुखिया हैं।

कोपरा: विकास खण्ड बड़े राजपुर के अन्तर्गत कोपरा परगनाा में कुल 12 ग्राम हैं। कोलू और टुरी के पश्चात् लछमन यहाँ के परगना मुखिया हुए जो कोरहोबेड़ा में निवास करते हैं। वर्तमान में दसरू यहॉ के परगना मुखिया है।

सोनाबाल(पिपरा):— कोंडागॉव विकास खण्ड के अन्तर्गत सोनाबाल परगना में कुल 30 गाँव आते है। सोनाबाल परगना का माँझी जातरा आदि अनेक कार्यक्रम में अनुपस्थित रहे। सम्भवतः उनकी यह अनुपस्थिति दूरी की अधिकता के कारण भी हो सकती है। यही कारण है कि देव—समिति द्वारा ग्राम पिपरा को परगना मान लिया गया है तथा गंचाराम के बाद अब रामलाल को देवी—समिति द्वारा माँझी के रूप में मनोनीत किया गया है।

आँवरी :– केशकाल विकासखण्ड के अन्तरर्गत आँवरी परगना में 20 गाँव आते हैं। इस परगना के मुखिया ग्राम खेतरपाल में निवास करते हैं। जाटा, घड़वा, मालो, दुलारसिंह यहॅा के मुखिया हो चुके हैं वर्तमान में ढेलू मॉझी यहॅा के परगना मुखिया है।

कोंगेरा (व्यास कोंगेरा):– वर्तमान काँकेर जिला के अन्तर्गत कोंगेरा (व्यास कोंगेरा) परगना में 18 ग्राम हैं जो केशकाल घाटी के नीचे बसे हैं। जंगल सिंह यहाँ के परगना मुखिया हैं।

सोनाबाल(पिपरा):– कोंडागॉव विकास खण्ड के अन्तर्गत सोनाबाल परगनाा में कुल 30 गाँव आते है। सोनाबाल परगना का माँझी जातरा आदि अनेक कार्यक्रम में अनुपस्थित रहे। सम्भवतः उनकी यह अनुपस्थिति दूरी की अधिकता के कारण भी हो सकती है। यही कारण है कि देव समिति द्वारा ग्राम पिपरा को परगना मान लिया गया है तथा गंचाराम के बाद अब रामलाल को देवी समिति द्वारा माँझी के रूप में मनोनीत किया गया है।

माँझियों की सूची एवं परगनों का नाम

क्र	नाम	पदनाम	स्थान
1	देवकरन नेताम	मांझी	सिलियसारा परगना
2	रूपेश मरापी	मांझी	कोड़गुड़ परगना
3	मानकू	मांझी	कोड़गुड़ परगना
4	धरमसिंग मण्डावी	मांझी	आँवारी परगना
5	बंशीलाल वट्टी	मांझी	सोनाबाल / पिपरा परगना
6	गाण्डोराम कोर्राम	मांझी	आलोर परगना
7	पनकूराम मण्डावी	मांझी	कोपरा परगना
8	दानसाय मरकाम	मांझी	कोपरा परगना
9	सर्रूराम मरकाम	मांझी	विसरामपुरी
10	आशाराम गावड़े	मांझी	अड़ेंगा परगना
11	जंगलसिंह कुंजाम	मांझी	व्यास कोंगेरा परगना
12	रैनुराम मरापी	मांझी	बंगोली परगना परगना
13	मानूराम मरापी	मांझी	बंगोली परगना परगना

दैवीय न्यायालय एवं न्याय प्रक्रिया

5. दैवीय न्यायालय एवं न्याय प्रक्रिया

मानवशास्त्रियों–समाज स्त्रियों द्वारा समय–समय पर कई जनजातीय व ग्रामीण परिवेश में होने वाले धार्मिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाता रहा है परंतु आपने अब तक बहुत से धार्मिक या दैवीय शक्तियों के बारे में सुना होगा, लेकिन देवी–देवाओं को दण्ड देने वाली ये न्याय स्थल विशिष्ट है।

कोण्डगाँव जिला के केशकाल के समीप होने वाला भंगाराम माँई का जात्रा देवी–देवताओं के न्याय के लिए प्रसिद्ध है। न्यायालय से लेकर आम न्याय परंपराओं में भी देवी–देवताओं की सौगंध खाई जाती है और देवी–देवताओं को न्याय का प्रतीक माना जाता है। इसके विपरीत छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के आदिवासी देवी–देवताओं को भी दण्ड देते हैं। ये आदिवासी जन सदियों से विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा करते आ रहे हैं। यहां देवताओं और मनुष्य का रिश्ता अटूट आस्था और विश्वास पर टिका हुआ है।

भक्त पूरी भक्ति से देवताओं की आस्था में डूबा रहता है और उस पर प्रगाढ़ विश्वास रखता है। आस्था और विश्वास में कमी होने की स्थिति में उन्हीं देवी–देवताओं को दैवीय न्यायालय की प्रक्रिया से भी गुजरना पड़ता है। इसके अलावा यहां सदियों से एक विशिष्ट प्रथा चली आ रही है। जो कि दैवीय न्यायालय के रूप में दृष्टव्य न्याय के इस सभा में देवी–देवताओं को भी दण्ड मिलती है। विशेष न्यायालय स्थल पर महिलाओं का आना प्रतिबंधित है। इस मेला में सिर्फ पुरूष सदस्य ही सहभागिता करते हैं।

रवाना

रवाना की कार्यवाही

रवाना स्थल जिससे कठघरा भी कहते हैं उस कठघरे में देवी–देवता खड़े होते हैं। आस्था व विश्वास के कारण जनजातीय व ग्रामीण समुदाय जिन देवी देवताओं की उपासना करते हैं, अगर वे अपने कर्तव्य का निर्वहन सही तरीके

से न करें तो उन्हीं देवी देवताओं को ग्रामीणों की शिकायत के आधार पर भंगाराम माई के मंदिर में दण्ड भी मिलती है। सुनवाई के दौरान देवी–देवता एक कठघरे में खड़े होते हैं। यहां भंगाराम माता न्यायाधीश के रूप में विराजमान होते है। माना जाता है कि सुनवाई के पश्चात यहाँ अपराधी को दंड और वादी को न्याय मिलता है। किसी गाँव में या परिवार विशेष में कोई दैवीय प्रकोप होता है तब देवता बिठा कर सिरहा के सिर पर अपने अपने ईष्ट देव को आमंत्रित कर उनके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि पुरे गॉव वालो को या किसी परिवार विशेष को कौन देव परेशान कर रहा

है। जिस देवता का नाम सामने आता है उस देवता को विधान पूर्वक भंगाराम माँई की ओर रवाना कर दिया जाता है । रवाना में सबंधित देवी के प्रतीक चिन्ह (लाट , डोली , या अन्य सामग्री) को सबंधित गाँव की सरहद के बाहर निकाल दिया जाता है । इसी को रवाना कहा जाता है । दूसरे गाँव के निवासी जिसकी सरहद में रवाना आया है।

वे अपने उस 'रवाना' को अपने गाँव की सरहद के बाहर पहुचाँ देते है फिर तीसरे गाँव, चौथे गाँव वाले यही प्रकिया अपनाते है और रवाना सामग्री उपर्युक्त प्रकिया से केशकाल घाट स्थित भंगाराम माँई तक पहुँच जाती है। मान्यता है कि जो भी देवी–देवता रवानगी से भंगाराम माँई के दरबार तक पहुँच जाते हैं, वे फिर कभी किसी को नही सताते। क्योंकि भंगाराम माँई उन्हे कठोर नियंत्रण में रखती है। रवाना में कभी–कभी मुर्गा–बकरा, सुअर या बछिया आदि जीव–जन्तु भी होते हैं जिन्हे गाँव की सीमा के पार बाँध दिया जाता है और उपर्युक्त प्रकिया से गुजरते हुए वे जीव–जन्तु भी भंगाराम माँई के दरबार तक पहुँच जाते हैं ।

परेशान करने वाले देवी–देवता को किसी सामग्री या जीव जन्तु के माध्यम से ही भंगाराम माँई के दरबार तक पहुँचाया जाता है । कभी यह सामग्री सोना–चांदी, तांबा, सिक्के आदि के रूप में होती है तो कभी पत्थर की चक्की, आभूषण के रूप में । यहाँ तक कि बैलगाड़ी भी 'रवाना' सामग्री हो सकती है। उपर्युक्त रवाना सामग्री को भादँव जातरा के दिन मंदिर के पास एक निर्धारित स्थान में विधान पूर्वक फेंक दिया जाता है। जो जीव–जन्तु रवाना के रूप में लाये जाते हैं उन्हे भी यहाँ जीवित फेंक दिया जाता है। उनकी बलि नही दी जाती। काँसे की थाली, लोटा, चाँदी के पुराने सिक्के , पुराने सिक्कों की माला, मंगल–सूत्र आदि सोना–चॉदी के अनेक कीमती आभूषण अब भी इस निर्धारित स्थान पर फेंक दिये जाते हैं। जिन्हें ग्रामीण दुबारा छुने से भी डरते हैं।

मान्यता : जैसा की पूर्वोक्त है, भंगाराम माँई को पुरे नौ परगनों के देवी–देवताओं की मुखिया माना जाता है । इसलिये इन नौ परगनाों में कहीं भी देवी–देवताओं से सम्बन्धित विवाद उतपन्न होने पर उसका फैसला देवों की माँई राजा अर्थात भंगाराम माँई को ही करना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि इस देवी का फैसला सभी देवी–देवता, सिरहा पुजारी एवं आम जनता को मान्य होता है ।

नौ परगनों के गाँव में किसी भी बीमारी या प्राकृतिक संकट का निवारण यदि स्थानीय देवी–देवता नही कर पाते तो श्री मॉ भंगाराम देवी के पास कष्ट–निवारण हेतु गुहार लगाते हैं। यह बीमारी अथवा दैवीय प्रकोप व्यक्तिगत, पारिवारिक या सामुदायिक अथवा ग्राम्य स्तरीय भी हो सकता है ।

यदि किसी व्यक्ति, परिवार या गाँव को कोई दुष्ट प्रवृति का देवता परेशान करता है तो उसे भंगाराम माँई के दरबार में पहुँचा दिया जाता है । मान्यता है कि भंगाराम माँई उस दुष्ट प्रवृति के देवी–देवता को कष्ट देती है तो उसके लिये भी भंगाराम माँई से गुहार की जाती है। भंगाराम माँई उस देवी अथवा देवता को उसके अपराध के अनुसार 05 या 10 वर्ष अथवा अनिश्चित काल के लिये कारगार में डाल देती है।

कारगार में बंद देवी अथवा देवता का दण्ड़– काल समाप्त होने पर वे इसकी सूचना जिस कुल की वह देवी या देवता है उस परिवार को देती है तब सबंधित परिवार के सदस्य भंगाराम माँई के पास पुनः आ कर अपने देवी – देवता को वापस ले जाते है और उसे घर में जन्म होने पर उसे भंगाराम माँई को अपना परिचय देना पड़ता है न केवल इतना अपितु उसे परीक्षा की प्रक्रिया से भी गुजरना पड़ता है। परीक्षा में सफल सिद्ध हो जाने पर उस देवी को भंगाराम माँई द्वारा उपयुक्त मान लिये जाने पर ही उस देवी अथवा देवता की पूजा विधान पूर्वक की जाती है। तथा उसे देवताओं के समूह में शामिल माना जाता है।

मंदिर प्रांगण में स्थित है 'दल' / कारागारः–

भंगाराम बाबा के मंदिर परिसर में गड्ढे नुमा घाट बना हुआ है। ग्रामीण इसे 'दल' जिसे कारागार भी कहते हैं। दण्ड के रूप मे दोष सिद्ध होने के पश्चात् देवी–देवताओं के लाट, बैरंग, आँगा, डोली आदि को इसी गड्ढे में डाल दिया जाता है। मान्यता है कि दोषी पाए जाने पर इसी तरह से देवी–देवताओं को दण्ड दी जाती है।

भंगाराम न्यायाधीश के रूप में सुनाते है। सभी देवताओं का फैसलाः–

गाँव में होने वाली किसी प्रकार की व्याधि, परेशानी को दूर न कर पाने की स्थिति में गाँव में स्थापित देवी–देवताओं को ही दोषी माना जाता है। विदाई स्वरूप उक्त देवी–देवताओं के नाम से चिन्हित बकरी या मुर्गी को सोने–चांदी आदि के साथ लाट, बैरंग, डोली आदि को लेकर ग्रामीण वर्ष में एक बार लगने वाले भंगाराम जातरा में पहुंचते है। जंहा भंगाराम की उपस्थिति में कई गाँवो से आए शैतान देवी–देवताओं की एक–एक कर पहचान करते हैं।

देवी–देवताओं को दण्ड की प्रकियाः–

इसके पश्चात् आँगा, डोली, लाट, बैरंग आदि के साथ लाए गए चूजे, मुर्गी, बकरी, डांग आदि को खाईनुमा गहरे गड्ढे किनारे फेंका जाता है। ग्रामीण इसे कारागार कहते हैं। देवी–देवताओं की पूजा अर्चना के बाद मंदिर परिसर में सुनवाई के लिए न्यायालय लगता है। देवी–देवताओं पर लगने वाले आरोपों की गंभीरता से सुनवाई होती है। आरोपी पक्ष की ओर से दलील पेश करने सिरहा, पुजारी, गायता, माझी, पटेल आदि ग्राम के प्रमुख उपस्थित होते हैं। दोनो पक्षों की गंभीरता से सुनवाई के पश्चात् आरोप सिद्ध होने पर फैसला सुनाया जाता है। मंदिर में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि देने व भेंट चढ़ाने का भी विधान है।

6. व्यवस्था एवं संचालन

देवी–समिति

रविवार, दिनॉक 19.08.1979 को नौ परगनों के ग्रामीणों की सुरडोंगर (केशकाल) में एक स्वस्फूर्त बैठक आयोजित की गयी थी, जिसमें भंगाराम माँई की पूजा–व्यवस्था के लिये एक समिति बनाने का निर्णय लिया गया था। समिति का नाम 'भंगाराम देवी समिति' रखा गया। सभा गठित करते हुए सभा के संचालन हेतु कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये जो निम्नानुसार हैं।

- गाँव में देवी–देवता से सम्बन्धित गड़बड़ी को ठीक करने के लिये कोई गाँव वाले भंगाराम माँई को अपने गाँव में बुलाना चाहें तो उन्हे समिति में कोष में 5.00 रूपये शुल्क जमा करना होगा।
- यदि कोई व्यक्ति पारिवारिक कष्ट–निवारण के लिये देवी को नियंत्रण करता है तो उसे शुल्क के रूपये में 10.00 रूपये समिति के कोष में जमा करना होगा।
- क्षेत्र (नौ परगनों) के बाहर के कष्ट–निवारण हेतु देवी को निंयत्रण करने पर उन्हें 51.00 रूपये समिति के कोष में जमा करना होगा।
- राष्ट्रीय मार्ग (घाटी) पर स्थित मंदिर में चढ़ौत्री से जो भी आय होगा उसका 25 प्रतिशत देवी समिति के कोष में जमा करना होगा।
- श्रद्धालुओं द्वारा भविष्य में जो भी सोना–चाँदी चढ़ाया जायेगा, वह पूरी सामग्री देवी समिति को सौंप दी जायेगी।
- पुजारीगण समिति के निर्णयानुसार कार्य करेंगे।
- समिति की सम्पत्ति का विवरण

देवी समिति के पास उपलब्ध सम्पत्ति का विवरण निम्नानुसार है:

1	चाँदी के 03 छतर,	क्रमश:100, 25 एवं 05 तोला वजन के
2	चाँदी का त्रिशूल	12 तोला
3	काँसे का त्रिशूल	01 नग
4	पीतल का कलश	
5	चाँदी की छड़ी	05 तोला
6	चाँदी का कलश	05 तोला
7	ताम्बा लोटा	
8	ताम्बा थाली	
9	चाँदी का घोड़ा	80 तोला
10	चाँदी की मूर्ति	28 तोला
11	चाँदी की मूर्ति	01 तोला
12	चाँदी की मूर्ति	02 नग 05.50 माशा
13	सोने की मूर्ति	02 नग 05 तोला
14	चाँदी–जड़ चँवर	15 नग 25 तोला
15	चाँदी की मूर्ति	
16	लोहे का नगाड़ा	02 नग
17	चाँदी की	02 मूर्तिया(वजन का अनुमान नहीं)
18	चाँदी के छत्तर	02 नग 09 तोला
19	चाँदी के नयन	02 तोला
20	सोना	04 माशा

पूर्व समिति पदाधिकारी का विवरण निम्नानुसार है:

अध्यक्ष	:	श्री लम्बोदर बलियार	पूर्व सांसद, केशकाल
उपाध्यक्ष	:	श्री महेश लाड़िया	गौरगॉव
सचिव	:	श्री नंदलाल सिंह	चिखलाडिही
गढ़िया	:	श्री सिन्हा	जामगॉव
कोषाध्यक्ष	:	श्री श्यामलाल नेगी	सुरडोंगर
सदस्य	:	श्री बलराम गौर	विश्रामपुरी
		श्री सरू मरकाम	कोदोभाट(गढ़ सिलियारा)
		श्री तिहारू	विश्रामपुरी
		श्री मोहन सिंह	पिपरा (सोनाबल)
		श्री दयाराम मॉझी	खेतरपाल
		श्री दुलार सिंह	आलोर
		श्री गाण्डोराम मॉझी	कोनगुड़
		श्री रूपेश मॉझी	कोरहोबेड़ा
		श्री दसरू मॉझी	कोंगेरा
		श्री जंगल सिंह मॉझी	कोहकामेटा(अड़ेंगा)
		श्री चमरा राम	गौरगॉव
		श्री देवकरण	पिपरा
		श्री हीरासिंह	कोहकामेटा
		श्री फूलसिंह	

वर्तमान में '' भंगाराम माँई समिति केशकाल–सुरडोगर'' के पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार हैं:–

1	श्री चमरा राम मण्डावी जी	अध्यक्ष	8	श्री करन सिंह शोरी	सदस्य
2	श्री बलराम मंर्याय	कोषाध्यक्ष	9	श्री राधेलाल सलाम	सदस्य
3	श्री नन्दलाल लाड़िया	सचिव	10	श्री रोयदास लाड़िया	सदस्य
4	श्री रामबिलास नेगी	सदस्य	11	श्री संतोष लाड़िया	सदस्य
5	श्री शुर्रूराम मरकाम	सदस्य	12	श्री कोदूराम गौर	सिरिहा
6	श्री मोहन सिंह राव	सदस्य	13	श्री सरजूराम गौर	पुजारी
7	श्री चन्द्र शोरी जी	सदस्य	14	श्री दूखूराम गौर	पुजारी

समिति के पूर्व पदाधिकारी :

वर्तमान में कार्यरत समिति के पूर्व नौ परगनों के प्रमुख मांझी मुखिया एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति पूजा–पाठ जातरा आदि के आयोजन में संयुक्त रूप से सहभागिता निभाते थे। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम व ग्राम निम्नानुसार है।

क्र	नाम	ग्राम
1	श्री हयबरन नेगी	जामगाँव
2	श्री दरियाव लाड़िया	जामगाँव
3	श्री तिलकनाथ	गौरगाँव
4	श्री चेमटू ठाकुर	चिखलाडीह
5	श्री शंभू पुजारी	कोहकामेटा
6	श्री भोंदा ठाकुर	कोरकोटी
7	श्री सरादू ठाकुर	सुरडोंगर
8	श्री फागूराम माला	जुगानी
9	श्री डप्पी राम	बोरगँव
10	श्री रामचरण राठौर	सुकबेड़ा
11	श्री गुरूचरण अग्निहोत्री	केशकाल
12	श्री सोनूराम सोरी	चिपरेल

प्रतिवर्ष आयोजित भांदव जातरा के सफल संचालन हेतु विभिन्न कार्यों एवं दायित्वों का निर्धारण रियासत काल में ही कर दिया गया था। पूर्व निर्धारित दायित्वों एवं कार्यों को उनके वंशज आज भी परम्परानुसार पुरा करते आ रहे हैं जो इस प्रकार है:–

क.	नाम	ग्राम	परंपरागत कार्य एवं दायित्व
1	हिरासिंह	छिन्दाडिही	गुनिया (पुजा आरती के लिए मिट्‌टी का पात्र) बनाकर प्रतिवर्ष लाते हैं।
2	लच्छूराम	गौरगॉव	त्रिसूल बनाकर प्रतिवर्ष लाते हैं।
3	बिसरूराम	सुरडोंगर	फूल एवं हार बनाकर लाते है।
4	मस्सूराम	गुडरीपारा	नगाड़ा छाने कार्य करते हैं।
5	लखमूराम	कोरगाँव	नगाड़ा बाजाते हैं
6	कंवलसिंह	सुरडोंगर	मोहरी बजाते हैं।
7	मंगलराम	खजरावण्ड	कुंवरपाठ देव का बजनिया हैं।

आँगा—निर्माण —प्रकिया एवं विधान

आँगा निर्माण के लिए एक लम्बी प्रकिया से गुजरना पड़ता है । आँगा प्रायः ईरा, साजा या बेल की लकड़ी का बनाया जाता है किन्तु ऐसा कदापि सम्भव नही कि किसी भी जंगल से उपर्युक्त प्रजाति के किसी भी वृक्ष को काट कर आँगा का निर्माण कर लिया जाये। वस्तुतः सम्बन्धित देवता स्वयं ही ईरा, साजा या बेल में से किसी एक प्रजाति के वृक्ष को पसंद करता है इसके बाद वह पसंदीदा वृक्ष किस गाँव से काटा जाये यह तय किया जाता है। यह तय हो जाने के बाद सम्बन्धित गाँव के लोगों सें सम्पर्क कर अनुमति ली जाती है तब वृक्ष वाले गाँव के लोग वधू—पक्ष की भूमिका निभाते हैं तथा आँगा बनाने वाले गाँव के लोग वर—पक्ष की, वर—पक्ष वालों को आदिवासी परम्परा के अनुसार 03 बार 'माहला' मँगनी (सगाई)के लिये जाना पड़ता है। अन्तिम माहला में 'बिहाव' (विवाह) की तिथि तय की जाती है। इसके बाद जिन्हें आँगा बनाना है, वे बारात ले कर बाजा—गाजा के साथ जाते हैं। वृक्ष को काटने के पहले कन्या—दान की रस्म पूरी की जाती है। फिर आदिवासी परम्परा के अनुसार वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को दिये जाने वाले नेंग के रूप में 2 साड़ियाँ, 3 खण्डी (लगभग 1 क्विटंल)चॉवल, दाल, बकरा—मुर्गा, नारियल, कबूतर, झाड़ गिरानी के 10 रूपये और बेटी—माँई नेंग के रूप में 10 रूपये देने पड़ते हैं।

इसके साथ ही 'गपा (बाँस की टोकरी), देव कौड़ी, शराब, लाई–गुड़ आदि भी देना पड़ता है। इसके बाद ही वृक्ष गिराया जाता है। पूरे रात नाच–गा कर विवाहोत्सव मनाते हैं और अपने काम के लायक लकड़ी चुन कर बाराती वापस चले जाते हैं। इसके बाद शुरू हो जाता है, आँगा छीलने का काम। यह काम 'पावे (अन्य गोत्र के लोग)' करते हैं। लगभग 3 दिनों में आँगा तैयार किया जाता है। इस अवधि में 'पावे' (अन्य गोत्र के लोग) करते हैं लगभग 03 दिनो में आँगा छीलने का काम। इस अवधि में 'पावे' को उपवास रखना पड़ता है। पवित्रता पर विशेष ध्यान दिया जाता है इसके बाद उस सम्बन्धित देवता की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है और जन्मोत्सव मनाया जाता है । जन्मोत्सव–परम्परा के अनुसार तिल गुड़ बाँटे जाते हैं। नाल काटने की रस्में पूरी की जाती है और रात भर 'करसाड़' किया जाता है । दूसरे दिन किसी खास गाँव के घाट में ले जा कर स्नान कराया जाता है तथा नामकरण किया जाता है इसी बीच देवी द्वारा अपने सिरहा का भी चयन किया जाता है ।

आँगा की परीक्षा

आँगा बनने तथा प्राण प्रतिष्ठा होने के पश्चात् भंगाराम माँई द्वारा उस देवी अथवा देवता की परीक्षा ली जाती है।

- परीक्षा में भंगाराम माँई द्वारा प्रायः ये प्रश्न पूछे जाते है :–
- तुम किस कुल की देवी अथवा देवता हो ?
- तुम्हारे माता– पिता कौन है ?
- आँगा जबरदस्ती बनाया गया है क्या उससे तुम सहमत हो ?
- जिस लकड़ी से आँगा बनाया गया है क्या उससे तुम सहमत हो ?
- क्या तुम्हारे साथ कोई और भी है ?
- क्या तुमने अपना पुजारी स्वंय चुना है ?
- क्या तुम अपने पुजारी और परिवार को बराबर चलाओगे ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर में यदि आँगा को हाँ कहना हो तो वह आगे बढ़ता है और नही कहना हो तो पीछे हटता है । भंगाराम माँई द्वारा जाँच परीक्षा में यदि आँगा खरा उतरता है तो उसे देवताओं के समूह में शामिल कर लिया जाता है और उसकी पुजा की जाती है अन्यथा उसे भंगाराम माँई के सुपुर्द कर दिया जाता है ।

उपसंहारः—

बस्तर के संस्कृति, धार्मिक अनुष्ठान, पूजा—पाठ की अपनी विशिष्ट परम्परा रही है। ऐसे में आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किया जा रहा ''कोण्डागॉव जिले का भंगाराम जातरा का मोनोग्राफ अध्ययन'' एक महत्वपूर्ण अध्ययन है। जहां कोण्डागॉव जिले के सुरडोंगर में स्थित भंगाराम माई का इतिहास रहस्य व चमत्कार रोचक है, वहीं उस क्षेत्र से जुड़े आदिवासियों व जनमानस के लिए प्रत्येक वर्ष होने वाला भंगाराम माँई का जातरा लोक आस्था का महत्वपूर्ण विषय है। यह विशिष्ट तथा उल्लेखनीय है कि भंगाराम माई के दरबार में न सिर्फ क्षेत्र के लोगों के लिए बल्कि समस्त देवी—देवताओं के लिए भी न्यायालय लगाकर भंगाराम माई न्यायाधिश की भूमिका में आरूढ होकर लोक आस्था के साथ देव आस्था को भी सुदृढ़ करती है।

भांदव मास में होने वाले जिस भंगाराम जातरा का क्षेत्र के लोगों को वर्ष भर इंतजार रहता है वहीं देश–विदेश के शोधकर्ताओं, पर्यटकों के लिए भी यह कौतुहल का विषय रहता है। ऐसे में इस लोक पर्व के माध्यम को दृष्टिगत रखते हुए इसके सफल आयोजन व भव्यता के लिए शासकीय व गैरशासकीय ढंग से उससे जुड़े लोगों के मार्गदर्शन में और भी बेहतर आयोजन, संरक्षण व संवर्धन की पहल की आवश्यकता है।

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)

फोन: 0771-2960530

E-mail : trti.cg@nic.in, web. : www.cgtrti.gov.in